अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी

विश्व फलक पर हिन्दी

- डॉ. जिंदर सिंह मुण्डा
सहायक प्राध्यापक
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
राँची कॉलेज, राँची
मो०-09939166388
E-mail– mundajindarsingh@gmail.com

विश्व में मानव सभ्यता, संस्कृति और ज्ञान-विज्ञान की उन्नत धरोहर को अक्षुण्ण रखने में भारतवर्ष का जो योगदान रहा है उसमें भाषिक दायित्वों के निर्वाहस्वरूप भारतीय भाषाओं की समन्वयक हिन्दी भाषा की अहम भूमिका है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में विगत कुछेक दशकों से भाषा, धर्म, राष्ट्रीयता एवं संस्कृति को लेकर काफी बवाल मचा है। दरअसल किसी भी देश को जोड़ने एवं बाँटने में इन तत्वों की विशेष भूमिका होती है। भारत एक सांस्कृतिक राष्ट्र है। संस्कृति की विविध छटाएँ यहाँ विभिन्न रूपों में विखरती हैं। उन्नीसवीं शताब्दी भारतवर्ष में धर्म एवं समाज-सुधार के लिए जाना जाता है। भारतीय नवजागरण का यह काल आधुनिकता के रूप में प्रचलित हुआ। भाषायी दृष्टि से यह विकास का युग था। खासकर जातीय भाषा हिन्दी इसी युग में नई चाल में ढली। यों तो हिन्दी का इतिहास काफी पुराना है परन्तु राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता की दृष्टि से यही वह समय था जहां हिन्दी खड़ी बोली के रूप में फलने-फूलने लगी। स्वातंत्र्योत्तर भारत में हिन्दी को संवैधानिक मान्यता मिलने के बाद हिन्दी हिन्दुस्तान की बिंदी बन गई। राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संपर्कभाषा, अंतरराष्ट्रीय भाषा आदि विभिन्न रूपों में हिन्दी संवरने लगी। राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी पूरे भारतवर्ष की एकमात्र भाषा है, जो सम्पूर्ण भारत में बोली और समझी जाती है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक, अरब सागर से बंगाल की खाड़ी तक हर जगह हिन्दी की खुशबू बिखरी है। ''हमारे साहित्य, दर्शन, धर्म और कला में भारतीयता की भावना ओत-प्रोत रही है और इसी आधार पर देश के विभिन्न भागों में बसनेवाले एकता का अनुभव करते हैं।''[1]

एक राष्ट्र की अनेक भाषाएं हो सकती हैं परन्तु राष्ट्रभाषा एक ही होती है। चाहे कोई भी भाषा हो संबंधित भाषा-भाषी उसे अपनी अस्मिता का प्रश्न मानता है। बांग्लादेश का अभ्युदय

Scanned with Cam

इसका ज्वलंत दृष्टांत है - समान धर्मावलम्बियों ने एकमत होकर वृहत्तर भारत से पृथक पहचान की आवाज उठायी और वे आज पृथक राष्ट्र के रूप में पहचाने जाते हैं, किन्तु जब चतुर्दिक उस इस्लामिक राष्ट्र में पंजाबी भाषा, पदाधिकारियों की यानी पंजाबियत हावी दिखी। पाकिस्तान का एक टुकड़ा सारे देश पर बलात् हुकूमत पर काबिज हो गया तो सारे जोर जुल्म बर्दाश्त कर भी बांग्लादेश वासियों ने अपने बंगालीपन को आगे रखा और वे सर्वथा अलग पहचान वाले 'आमार सोनार बांग्लादेश' से शूच्याग्र कम कुछ पर भी तैयार नहीं। इस तरह हम देख रहे हैं - आज एक भाषा आधारित राष्ट्र बांग्लादेश पूरे वजूद के साथ खड़ा है। किसी भी देश की राष्ट्रीयता के विकास में राष्ट्रभाषा के साथ ही राष्ट्रीय झंडा, राष्ट्रगान आदि प्रतीक हैं जो हमें एक सूत्र में बांधने का काम करती है।

झारखण्ड, छत्तीसगढ़, उतरांचल, तेलांगना आदि के नवनिर्माण का आधार भाषायी एवं संस्कृति का है। किसी भी देश के लिए राष्ट्रीय झंडा केवल वस्त्र खंड नहीं है वह राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। इसलिए उस झंडे की आन पर किसी को गर्दन कटाते देर नहीं लगती। कोई भी कुर्बानी उसकी रक्षा के लिए बड़ी नहीं मानी जाती। इसी तरह राष्ट्रीयता का दूसरा प्रतीक राष्ट्रगान भी। राष्ट्रगान दूसरे गानों की तरह केवल संगीत नहीं हैं बल्कि वह संगीत से बहुत कुछ बढ़कर है; वह समस्वर में बँधी हुई राष्ट्र की आत्मा की गूँज है जिसे सुनते ही कोटि-कोटि हृदय एक ताल पर थिरकने लगते है।

सर मुहम्मद इकबाल ने क्या खूब कहा है - "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा, हम बुलबुले हैं इसकी ये गुलिस्तां हमारा।" सचमुच हिन्दुस्तान का विश्व पटल में एक अलग ही स्थान है। चाहे वह भाषा, संस्कृति, कला, साहित्य, दर्शन, खान-पान, रहन-सहन, पर्व-त्यौहार आदि तमाम संस्कार भारतीयता के विविध संदर्भ को दर्शाते हैं।

विभिन्न धर्मावलंबियों एवं जातियों के होने के बावजूद प्राचीन काल से ही भारत में सांस्कृतिक एकता रही है। भारतीय संस्कृति विविध सम्प्रदायों तथा जातियों का समन्वय है यहाँ की संस्कृति वैदिक, बौद्ध, हिन्दू, मुस्लिम ओर आधुनिक संस्कृतियों के सम्मिश्रण से बनी है। "प्रत्येक सभ्यता, प्रत्येक संस्कृति अपने-आप में पूर्ण होती है। उसके सभी अंश, उसके सभी पहलू एक दूसरे पर अवलंबित और सब-के-सब किसी एक केन्द्र से संलग्न होते हैं। संस्कृतियाँ जब बदलती हैं तब खान-पान, रहन-सहन, पोशाक और परिच्छेद भले ही बदल जाएँ, किन्तु उनका मन नहीं बदलता, सोचने की पद्धति उनकी नहीं बदलती और जीवन को देखने वाला दृष्टिकोण उनका एक

Scanned with Cam

ही रहता है। विशेषतः भारत जैसे प्राचीन देश को यदि कोई दबाकर उसे अमेरिका या यूरोप बनाना चाहेगा तो इस दबाव का परिणाम अच्छा नहीं निकलेगा।''[2]

वैसे भारत सदियों से ही विदेशी आक्रमणकारियों का दंश झेलता आया है; फिर भी वह आज अपने स्थान पर स्थिर एवं काबिज खड़ा है एवं विश्वगुरू के पद पर टिका हुआ है।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा हैं क्योंकि इस भाषा के जरिए हमारी संस्कृति सुरक्षित है। भारतीयता को एकसूत्र में बाँधे रखने में भाषा की महत्ती भूमिका होती है इसका प्रमाण हिन्दी छोड़कर कोई दूसरी भाषा नहीं दे सकता। 'वंदे मातरम' के रचयिता बंकिम चन्द्र चटर्जी ने बंग-दर्शन में लिखा - ''हिन्दी भाषा की सहायता से भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों के मध्य में जो ऐक्य बंधन संस्थापन करने में समर्थ होंगे वही सच्चे भारत बंधु पुकारे जाने योग्य हैं। एच0टी0 कोलब्रुक ने एशियाटिक रिसर्च में लिखा - ''जिस भाषा का व्यवहार भारत के प्रत्येक प्रांत के लोग करते हैं, जो पढ़े लिखे तथा अनपढ़ दोनों की साधारण बोलचाल की भाषा है जिसकी प्रत्येक गाँव में थोड़े बहुत लोग अवश्य समझ लेते हैं; उसी का यथार्थ नाम हिन्दी है।''[3]

आदिकाल से ही हिन्दी किसी न किसी रूप में राज काज की भाषा थी। इतिहास के पन्नों को खंगालते हैं तो यह स्पष्ट होता है कि मुगलों के शासन काल से ही लगान वसूलना, कर प्रणाली आदि राजकीय कार्य-व्यवहारों में हिन्दी ही माध्यम के रूप में कार्य होता था। आजादी के बाद हिन्दी को संवैधानिक मान्यता मिली। अनुच्छेद 343-351 के राजभाषा के रूप में हिन्दी नई भूमिका ग्रहण की। भारत के संविधान द्वारा राजभाषा के पद पर आसीन होने के कारण हिन्दी का प्रयोजनमूलक रूप अत्यधिक उपयोगी तथा सक्रिय होने के साथ ही उसके प्रगामी प्रयोग की अनेक दिशाएँ उदघाटित हुई। हम सभी जानते हैं कि 14 सितम्बर 1949 के दिन भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार किये जाने का निर्णय संविधान सभा द्वारा किया गया था। अतः प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को भारत भर में 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है।

आजादी के बाद नवीन उदभावनाओं नई उम्मीदों के साथ हिन्दी विश्व फलक पर अपनी छाप छोड़ी। विश्व में ज्ञान-विज्ञान और प्रौद्योगिकी के तेजी से फैले प्रसार के साथ भारत में भी इस नवीनतम ज्ञान-विज्ञान और टेक्नोलॉजी की आँधी उमड़ पड़ी। उसके फलस्वरूप हिन्दी को नये महत्वपूर्ण भाषिक दायित्वों और अभिव्यक्तिं के सर्वथा नवीनतम क्षेत्रों से गुजरना पड़ा। आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा वैज्ञानिक संदर्भो के बदलाव के साथ बदलती हुई स्थितियों की जरूरत

Scanned with Cam

के प्रयोजन विशेष के संदर्भ में हिन्दी के एक ऐसे रूप की तीव्र आवश्यकता पड़ी जो प्रशासन और ज्ञान-विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों को अभिव्यक्त कर सक्षमता से रूपायित कर सके।''[4]

विश्व में सबसे ज्यादा संख्या चीनी भाषा बोलने वालों की है। दूसरे नंबर पर अंग्रेजी एवं हिन्दी का तीसरा स्थान है। चीनी की अपेक्षा अंग्रेजी कहीं अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि उसका प्रसार सारे संसार में है और चीनी सीमित भूभाग में।

इस दृष्टि से अंग्रेजी को कुछ लोग अंतरराष्ट्रीय भाषा कहने का आग्रह करते हैं। हिन्दी के प्रसार की चेष्टा नहीं की। हाँ उसे दबाने की चेष्टाएँ पिछले हजार वर्षों से होती आ रही है। इस अवरोध और बाधा के वावजूद हिन्दी केवल अपनी अन्तर्निहित शक्ति के कारण आगे बढ़ी है। वितरण की दृष्टि से हिन्दी के महत्व को स्वीकार करना पड़ेगा। भारत में विज्ञान और टेक्नोलॉजी के प्रस्फुटन और फैलाव के कारण भी इनकी अभिव्यक्त करने के माध्यम से हिन्दी को नवीन रूप में ढालने की सख्त जरूरत महसूस हुई। ''वैसे न्याय, दर्शन, तर्कशास्त्र, नाट्यशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, मनोविज्ञान, ज्योतिष, गणित तथा अन्य सामाजिक शास्त्र आदि ज्ञान-विज्ञान क्षेत्रों की चिंतन परम्परा की अभिव्यक्ति संस्कृत एवं हिन्दी भाषाओं द्वारा सहज सम्भव थी किन्तु इन विज्ञान के क्षेत्रों तथा पश्चिम से आयी नयी टेक्नोलॉजी एवं भौतिक शास्त्र, रसायन, कम्प्यूटर, इंजीनियरी, अंतरिक्ष विज्ञान, इलेक्ट्रानिक, दूरसंचार आदि अनेक विज्ञान के क्षेत्रों से संम्बद्ध तकनीकी एवं प्रयोजनमूलक शब्दावली के निर्माण एवं प्रयोग की आवश्यकता हिन्दी भाषा के लिए अनिवार्य रूप में सामने आयी।''[5]

'तकनीकी शब्दावली आयोग' 1961 के गठन के बाद हिन्दी भाषा का प्रयोग प्रयोजनमूलक अर्थ में विकसित हुआ। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली से तात्पर्य यह है जो विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में हिन्दी अपनी शब्दावली निर्माण करने लगा।

हिन्दी का प्रभुत्व विभिन्न क्षेत्रों में होने लगी वह साहित्य से निकलकर वित्त एवं वाणिज्य कार्यालयी, राजभाषा प्रयुक्ति, विज्ञापन, भाषा प्रयुक्ति, विधि एवं कानूनी भाषा एवं विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्रों में पाँव पसारने लगी।

अब तक हिन्दी का जो प्रचार-प्रसार हुआ है और वह पर्याप्त संतोषजनक है, वह प्रचार से अधिक दूसरे साधनों के द्वारा हिन्दी भाषा का जो अभी तक विकास हुआ है - उसमें दो भागों में बाँटा जा सकता है। (1) सरकारी और (2) गैरसरकारी। सरकारी संस्थानों में शासन, न्याय, शिक्षा, वैदेशिक सम्पर्क आदि ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें हिन्दी का प्रवेश और प्रसार सरकारी स्तर पर हो रह है।

Scanned with Cam

आज हिन्दी वैश्विक भाषा बन चुकी है। मॉरीशस, रूस, कनाडा, अमेरिका, जापान, नेपाल, फीजी, चीन आदि देशों में हिन्दी अपनी पताका फहरा रही है। विश्व में हिन्दी के प्रचार-प्रचार का एक प्रमुख कारण यह भी है कि भारत विश्व का सबसे बड़ा बाजार है। अपनी आर्थिक शुलभ ईच्छाओं के उद्देश्य से विदेशियों के लिए हिन्दी सीखना जरूरी ही नहीं मजबूरी बन चुकी है। विश्व हिन्दी सम्मेलन के आयोजन से भी विश्व फलक पर हिन्दी अपनी छाप छोड़ रही हैं भाषा के विकास में वाणिज्य और व्यवसाय की भूमिका अहम है। आज की सभ्यता वाणिक सभ्यता है।

''संस्कृत की एक पुरानी कहावत है - 'वाणिज्ये वसते लक्ष्मी:' वाणिज्य किसी सीमित घेरे में नहीं हो सकता। क्षेत्र जितना व्यापक होगा, वाणिज्य उतना ही लाभकर होगा। भारत में हिन्दी के अतिरिक्त कोई भाषा नहीं है जो अन्त: प्रान्तीय स्तर पर वाणिज्य व्यवसाय को चलाने में सहायता कर सकती है।''[6]

हिन्दी के विकास में गैरसरकारी संस्थानों का भी योगदान कम नहीं है। हिन्दी संस्थान, सिनेमा, समाचार पत्र, रेडियो, दूरदर्शन, पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तक आदि की सराहनीय भूमिका रही है। नागरी प्रचारिणी सभा काशी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, हिस्दुस्तानी अकादमी, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, बंगीय हिन्दी परिषद्, बंगीय हिन्दी मण्डल आदि संस्थाएँ हिन्दी को विश्व पटल पर लाने में अग्रणी भूमिका निभायी।

हिन्दी के प्रचार एवं विकास में सिनेमा का बहुत बड़ा योगदान है। यों तसवीरें तो बंगला, तमिल आदि कुछ अन्य भारतीय भाषाओं में भी तैयार हुई किन्तु वे तत् क्षेत्रों तक ही सीमित रही। सच पूछिए तो सिनेमा ने हिन्दी के प्रचार में जितना बड़ा काम किया है; उतना कोई एक माध्यम अब तक नहीं कर सका है।

हिन्दी सिनेमा का वर्चस्व अब विदेशों में काफी हद तक बढ़ चला है कहा जाता है, कि 'चन्द्रकांता संतति' नामक हिन्दी उपन्यास इतना चर्चित हुआ कि इसको पढ़ने के लिए न सिर्फ हिन्दुस्तान में बल्कि विदेशों में हिन्दी के प्रति झुकाव पैदा हुआ। जहाँ तक फिल्म सितारों की बात है, अमिताभ बच्चन, रेखा, आमिर खान, शाहरूख खान, ऐश्वर्या राय, सलमान खान जैसे सितारे हिन्दुस्तान का नाम विश्व में रोशन किया। 'बजरंगी भाईजान' 'बाहुबली' जैसी फिल्म इसका ताजा उदाहरण है जहाँ हिन्दी की लोकप्रियता मिसाल कायम करती है। किसी भी भाषा के प्रचार में रेडियो एवं दूरदर्शन का बहुत बड़ा हाथ है। समाचार पत्रो, पत्रिकाओं, रेडियो, दूरदर्शन में यह

Scanned with Cam

वैशिष्ट्य है कि वह जीवित भाषा को सामने लाता है। जीवित भाषा से तात्पर्य उच्चरित भाषा से है अर्थात् जिस रूप में बोली जाती है उसे रेडियो उसी रूप में प्रस्तुत करता है।

जीवन के बहुत से पक्ष ऐसे हैं जहाँ हिन्दी भाषी अपनी भाषा छोड़े अंग्रेजी का व्यवहार करता है। और तो और जब वह अपने मित्रों से मिलता है और किसी विषय पर चर्चा होती है, तो अंग्रेजी में। वह तो अपने बच्चो को डाँटता है तो भी अंग्रेजी में।

यह क्या विडम्बना है, जब आप खुद हिन्दी में नहीं बोलते वे दूसरे को कैसे उपदेश दे सकते है। हिन्दी अगर विश्व भाषा के रूप में अपना मुकाम हासिल कर चुका है। तो हमें हिन्दी का व्यवहार घर, परिवार समाज, राज्य, देश एवं विदेशों में करना होगा, तभी मातृभाषा, राजभाषा, राज्यभाषा, राष्ट्रभाषा का कल्याण होगा और देश की प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. राष्ट्रभाषा हिन्दी समस्याएँ और समाधान - देवेन्द्र नाथ शर्मा, पृ0-13
2. संस्कृति के चार अध्याय - रामधारी सिंह दिनकर, पृ0-635
3. हिन्दी भाषा - हरदेव बाहरी, पृ0-155
4. प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और प्रयोग - दंगल झाल्टे, पृ0-37
5. प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और प्रयोग - दंगल झाल्टे, पृ0-38
6. राष्ट्रभाषा हिन्दी समस्याएँ और समाधान - देवेन्द्र नाथ शर्मा, पृ0-209

Scanned with Cam